## 1. REPORTS OF THECOMMISSIONER FOR SC1IEDULLD CASTES AND SCHEDULED TRIBES

## II. REPORT OF THE COMMITTEE ON UNTOUCHABILITY, ECONOMIC AND EDUCATIONAL DEVE-LOPMENT OF THE SCHEDULED CASTES.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY ( F LAW AND IN THE DEPARTMEN r OF SOCIAL WELFARE (SHRI JAGAI* NATH RAO) : Sir, I beg to move :

"That the Sixteenth, Seventeenth, and Fightecnth iteports of the Commissioner for Scl :duled Castes and Scheduled Tribes for tie years 1966-67. 1967-68 and 1968-69. laid on Ihe Table of the Rajya Sabha on the 29th April, 1968. 15th May, 1 >69 and 30th March, 1970, respectively, le taken into consideration.""

Sir. I also move :

"That the Report of the Committee on Untouchability, Economic and Educational Dev lopment of the Scheduled Castes (Parts I—V), laid on the Table of the Rajy; Sabha on the 6th May, 1969, be takt t into consideration."

Sir, 1 do not pant to make any speech at this stage but J will reply to the debate to save time.

MR. DEPU "Y CHAIRMAN : All right.

Tlie questions were proposed-

**श्री राजनारायण** (उत्तर प्रदेश ): श्रीमन्, मैं आपका और आपके द्वारा इस सदन का तथा विरोधी पक्ष के उन सम्मानित सदस्यों का बहुत ही अनुगृहीत हूं जिन्होंने मुझे आज यह अवसर प्रदान किया है । जब मैं शेड्यूल्ड कास्ट, परिगणित जातियों से सम्बन्धित विषय पर इस सदन में चर्चा करने के लिए खड़ा हुआ हूं तो सर्वप्रथम हमको यह कह देना चाहिये कि भारत की सरकार आज तक परिगणित जातियों की तकदीर को आगे बढ़ाने के लिए कोई ठोस कदम उठा सकने में असमर्थ रही है । श्रीमन्, परिगणित जाति की समस्या क्या है । मैं समझता हूं कि अगर सांस्कृतिक स्तर पर हम परिगणित जाति की समस्या को सचमुच में सुधारने के लिये आगे नहीं बढ़ेंगे तो हमारा भविष्य अन्धकारपूर्ण रहेगा । क्या इस सदन के सम्मानित सदस्य इस बात को मानने से अब भी गुरेज करेंगे . . .

SHRI G. A. APPAN (Tamil Nadu) : Mr. Deputy Chairman, Sir, one point. The honourable Minister has moved a motion that the three Reports of the Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes . . .

SHRI K. S. CHAVDA (Gujarat) : There is one more.

SHRI G. A. APPAN : ... and the Elaya-perumal Committee Report be taken into consideration. I feel that these Reports relating to three different years and another Report which has no connection with these Reports are submitted by a statutory authority called the Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes appointed by the President and whose Reports are presented to the President who commits these things to both the Houses of Parliament

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Now what is your point ?

SHRI G. A. APPAN : The question is how far we would be justified in taking up all these three voluminous Reports and the separate Report of the Elayaperumal Committee at one and the same time. I request that these three Reports be discussed separately and the Elayaperumal Committe,; Report also ba discussed separately. In view of that 1 feel that the Chair should be able to give some ruling on this issue because the Reports relate to various period and not one period.

MR. DEPUTY CHAIRMAN . Mr. Raj-narain, you may continue.

SHRI G. A. APPAN : Now what is your ruling, Sir ?

SHRI K. S. CHAVDA : Sir, he has an important point.

MR DEPUTY CHAIRMAN : I have understood his point. There is no point tn repeating the points because I have understood his point, that the Reports have not been discussed. Now that an opportunity to discuss all those Reports is given, I think that discussion will serve the purpose fully. So let us allow Mr. Rajnarain to continue.

**श्री बी० एन० मंडल** (बिहार) : मिनिस्टर को कहा जाय कि दोनों को सेपरेट कर दें, जो कमिश्नर की रिपोर्ट है वह अलग और जो कमेटी की रिपोर्ट है वह अलग । कमेटी की रिपोर्ट को निश्चित तरीके से अलग कर देना चाहिए, उसे दूसरे सेशन में लाइए । इस सेशन में कमिश्नर की—रिपोर्ट को डिस्कस कर लें ।

**श्री उपसभापति** : हो सकता है इस मोशन पर अगले सेशन में बहस हो । अभी जिन सदस्यों को बोलना है वे दोनों रिपोर्ट के बारे में अपने विचार पेश कर सकते हैं ।

**श्री राजनारायण** : श्रीमन्, मैं जो रिपोर्ट देने जा रहा हूं वह कमिश्नर के बूते के बाहर है, वह रिपोर्ट देना जो शेड्यूल्ड कास्ट में पैदा हुए लोग हैं उनके बूते के भी बाहर है । तो जरा शांतिपूर्वक सुना जाय । तो मैं यह अर्ज कर रहा था—हमारे मित्र बीच में खड़े हो गए, धारा टट गई—कि भारत की सरकार और उससे सम्बन्धित राज्य सरकारें परिगणित जातियों की दशा को सुधारने के लिए आज तक कोई ठोस काम नहीं कर पाई । इस बात को बहुत ही आसानी से कबूल कर लिया जाना चाहिए ।

मैंने पहले ही कहा था . . . (Interruptions) अगर सुनेंगे नहीं तो हम चले जाएंगे ।

**श्री उप सभापति** : राजनारायण जी, हम सुन रहे हैं ।

**श्री राजनारायण** : आपका तो विषय है, आप तो सारनाथ भी हो आए हैं . . .

**श्री उपसभापति** : रिपोर्ट की बात बोलिए ।

**श्री राजनारायण** : यह उसी रिपोर्ट से सम्बन्धित है । इस रिपोर्ट पर बहस करके क्यों करेंगे अगर आप सारनाथ जाकर लोगों को आगे बढ़ाने की कोशिश नहीं करेंगे क्योंकि सारनाथ में सर्वप्रथम भारतवर्ष में मानव धर्म, मानवता एक है इसका उपदेश दिया गया, वह जगह सारनाथ है । जहां पर कि गौतम बुद्ध, जिन का पहला नाम सिद्धार्थ था, वे जब बोध गया से आये हैं तो सारनाथ में उन्होंने अपना पहला भाषण दिया और प्रारम्भ में सारनाथ में उन को केवल 6 शिष्य ही मिले हैं और उन छहों शिष्यों ने कहा कि हमारा समाज तो चार वर्णों का है । इस में ब्राह्मण हैं, क्षत्रिय हैं, वैश्य हैं, शूद्र हैं और आप कहते हैं कि मनुष्य बराबर हैं, समान हैं, इस में ऊंच नीच और छोटा बड़ा नहीं माना जाता . . .

SHRI MAHAVIR TYAGI (Uttar Pradesh) : There is no quorum.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : We have to ring the Bell.

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI S. N, MISHRA) : Now that he has already begun the speech, the Supreme Court would at least give him this courtesy of completing his speech on Monday.

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI OM MEHTA) : You ring the quorum bell and I will bring the Members to complete the quorum.

SHRI S. N. MISHRA : Please adjourn the House.

SHRI CHANDRA SHEKHAR (Uttar Pradesh) : The Supreme Court will allow him.

**श्री राजनारायण** : सुप्रीम कोर्ट को कहेगा कौन ? आप लिख कर भेजिए, आप का सेक्रेटरी भेजें ।

SHRI OM MEHTA : We will continue the discussion.

SHRI MAHAVIR TYAGI : If the speech of Siri Rajnarain is to continue, the Supreme Court will allow on Monday. ,

SHRI S. > . MISHRA : Yes.

SHRI CI ANDRA SHEKHAR : We share the sc itiments of the Leader of the Opposition.

**श्री राजनारायण :** आप हम को भाषण भी न करने दें और जाने भी न दें ; यह क्या है ?

SHRI CHANDRA SHEKHAR : It will go to the S ipreme Court.

**श्री राजनारायण** : श्रीमन्, यह तो ठीक नहीं है ।

SHRI CI ANDRA SHEKHAR : It cannot be m idc a formal one.

SHRI S. N. MISHRA : A very humble request to he Supreme Court.

SHRI O A MEHTA: We are meeting only on M 'nday and on that day we are having a discussion on the land-grab movement also. It wiH not be possible for us to complete the discussion of these reports on tlat day and as decided earlier, it wiH havi to be postponed till the next Session. I! Shri Rajnarain is allowed by the Suprem} Court, he can speak on Monday.

**श्री राजनारायण** : श्रीमन्, . . .

SHRI SANDRA SHEKHAR : The quorum is ..lready there now. He can now speak.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Shri Rajnarain may continue his speech now.

आप राजनारायण जी को बोलने दीजिए ।

**श्री श्याम नन्दन मिश्र** : आप 40 मिनट से कम बोलेंगे क्या

**श्री राजनारायण** : मैं तो 3 घंटे बोलूंगा । आप हमारी मुसीबत देखिये, अब कोरम नहीं है । एक मामले में तो हम हार गये जिस के लिए मैं सुप्रीम कोर्ट से यहां आया । तो मैं यह कह रहा था कि उस के बीच में कई बार लोगों ने बोल कर हमारी धारा रोकी । असल में उन का मूड नहीं हैं । तो मैं यहां मोटी मोटी बात कहना चाहता हूं । शेड्यूल्ड कास्ट की तकदीर कैसे सुधरेगी और उस की तकदीर क्यों खराब है ? सारनाथ में बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा कि मानव समाज का जो बंटवारा है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में वह गलत है । यह सब एक है । उन्होंने कहा कि कैसे ? तो गौतम बुद्ध ने कहा कि तुम एक ब्राह्मण ले लो और एक शूद्र ले लो, एक औरत ले लो और एक मर्द ले लो और दोनों में संभोग हो । अगर गर्भ रहा तो क्या पैदा होगा ? उन के शिष्यों ने कहा कि बच्चा पैदा होगा । तो उन्होंने कहा कि अगर इन की जाति एक न होती तो ब्राह्मण और शूद्र के संभोग से बच्चा पैदा कैसे हुआ । इस बात से उन के शिष्यों के दिमाग का कुहरा छंट गया । और सब शिष्य समझ गये कि मानव जाति वास्तव में एक है । और वही मानव-जाति का एक संदेश लेकर आज बौद्ध धर्म चल रहा है और मैं पूछना चाहता हूं सरकार से कि सरकार इस बात को क्यों नहीं देखती कि हमारे खोबरागड़े साहब भी बौद्ध धर्मावलम्बी हैं, वह सारनाथ में गये जहां पर पांच हजार आदमी एक साथ बैठ कर के भोजन किये और जहां पर तमाम सनातन धर्म, हिन्दू धर्म, की बधिया बैठाई । मैं इनकी तारीफ करता हूं, मैं इनकी सराहना करता हूं, इन्होंने यह काम अच्छा किया, बढ़िया किया । क्या सरकार हमको एक नजीर देगी कि सरकार की ओर कोई ऐसा वातावरण बनाने की कोशिश हुई जिससे कि ब्राह्मण अपने को ऊंचा न समझे और हरिजन अपने को नीचा न समझे ? सरकार की ओर से क्या आज तक कोई ऐसा प्रयत्न हुआ है जिससे ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व और चमार का चमारत्व खत्म हो जाय ? जब तक चमार का चमारत्व नहीं जायगा और ब्राह्मण की ब्राह्मणयी नहीं जायगी तब तक मानव समाज एक समतल नहीं हो सकता । हमारे मंत्री महोदय हमको कोई एक नजीर दे दें क्योंकि मोहन धारिया और चन्द्र शेखर दोनों समाजवाद की बात करते हैं, मुझे बहुत खुशी है लेकिन समाजवाद क्या भारत में अर्थवाद में फंस कर रहेगा ? भारतवर्ष का समाज दूषित है, भारतवर्ष का समाज सड़ा हुआ है और आज भारत की तरक्की में सब से बड़ी बाधा यह है कि भारतवर्ष में वर्ण-व्यवस्था और जाति-व्यवस्था है । तो भारतवर्ष की वर्ण-व्यवस्था और जाति-व्यवस्था पर कुठाराघात करने के लिये भारत की सरकार ने 15 अगस्त 1947 से आज तक भारत-वर्ष में कौनसा ऐसा वातावरण बनाया ?

[श्री राजनारायण]

श्रीमन्, मैं श्रीमान खोबरागड़े साहब से निवेदन करूंगा कि वह एक दिन जरा कुशीनगर चले जायें जहां पर कि बुद्ध की विशाल समाधि बनी हुई है, वहां पर जो हरिजन जाते हैं, जो पिछड़ी जाति के लोग जाते हैं, जो भी जाते हैं वह राम राम, राम राम, जय हनुमान जय हनुमान, जय राम, जय राम कहते जाते हैं, जाते हैं बौद्ध धर्म के बुद्ध का दर्शन करने और उनके मुंह से राम राम, जय हनुमान, जय हनुमान, निकलता है। क्यों ? इतने दिनों से उनके दिमाग को इस जड़ता ने दबोचा हुआ है कि बुद्ध के दर्शनार्थ जा रहे हैं कुशीनगर और वहां जय हनुमान जय हनुमान, राम राम, का नारा लगाते हैं ।

श्रीमन्, आप भी जरा ध्यान दे कर सुनें । "रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम ।" यह क्यों होता है । आज गुजराल साहब यहां नहीं हैं, गुजराल साहब कहते हैं कि हम सन् 1942 की क्रान्ति में थे और श्री जनेश्वर मिश्र हमारे क्रान्तिकारी नेता को कह दिया कि आप कहां थे, मैं गुजराल साहब से पूछना चाहता हूं कि गुजराल साहब के रेडियो से इस का प्रसारण क्यों हो ? क्या जो सरकार रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीता राम का पाठ नित्य प्रति करायेगी वह शेड्यूल्ड कास्ट को शोषण से बचा सकती है ? इस सरकार का दिमाग कितना सड़ा हुआ है । जब पतित होगा कोई तभी तो पतित पावन होगा न ? मैं आज कहना चाहता हूं कि भारतवर्ष में न आज कोई पतित हो और न पतित पावन की आवश्यकता है ।

**श्री अकबर अली खान** (आंध्र प्रदेश) : महात्मा गांधी के जलसों में यह तो गाया जाता था ।

**श्री राजनारायण** : इसी लिये मैं अर्ज कर रहा हूं कि गांधी जी के सद्गुणों को तो अकबर अली खान साहब भूल गये और गांधी जी ने जो एक परम्परावाद को चलाया था उसको अकबर अली खान साहब ने ले लिया । अकबर अली खान साहब आप बैठिये, आप इसका जरा जवाब दीजिये । पतित पावन के माने हैं जो पतित है, जो मजलूम है, महरूम है, उस को उठाने वाला ।

मैं श्रीमन्, आज अकबर अली साहब से एक बात जानना चाहता हूं । मैं बड़े बड़े मुसलमानों के जलसे में जाता हूं, बड़ी बड़ी दाढ़ी रखने वाले मिल वहां रहते है, मगर जब मैं कुरान की आयत सुनाने लगता हूं तो वह ताकने लगते हैं : यह कहां से आ गया । क्योंकि हमारा अर्थ दूसरा है उनका अर्थ दूसरा है । तो घबराते हैं । मैंने उनसे पूछा कि भाई कबीर के इस दोहे को क्यों नहीं याद करते । "जो तू ब्राह्मन जाया आन बाट काहे नहीं आया ।" कबीर कहां पैदा हुए लुहारू जाति में पैदा हुए वाराणसी के नजदीक, जहां बनारसी साड़ी बनती है, जो आजकल विदेशी मुद्रा अर्जित करती है । कबीर कहते थे न मैं हिन्दू हूं न मुसलमान हूं । मैं इनसान हूं । कबीर को मार पड़ी है लड़कपन में । एक दिन कबीर ने कहा : भाई सुनो, तुम कहते हो ब्राह्मण हैं, सबसे श्रेष्ठ हैं, ऊंचे हैं । लेकिन उन्होंने कहा : तुम ब्राह्मणी के पेट से पैदा हुए तो ब्राह्मण कहलाते हो, तुम हमसे ऊंचे कैसे हो । उन्होंने सवाल पूछा कि जब तुम हमसे ऊंचे हो तो कोई दूसरे रास्ते से क्यों नहीं निकल गये । ब्राह्मण यह सुन कर चुप हो गया । मुसलमान से कबीर ने ललकार कर कहा :

"जो तू तुर्की ·····"

ऐ मुसलमान, तुम अपने को कहते हो हिन्दुओं से अलग हो, तो ईमानदारी से बताओ तुम मुसलमानी के पेट से पैदा हुए तो क्या तुम्हारा खतना पेट में कटा था । तुम्हारा खतना पेट में नहीं कटा । मां के पेट से, कुदरत के घर से हिन्दू और मुसलमान का बच्चा निकला है । एक ही घर से निकला है । तो मजलूम, महरूम रहेंगे तब न उनको उठाने वाला होगा । कोई पतित, नीच, भ्रष्ट रहेगा तब न कोई उद्धारक होगा ? तो मैं चाहता हूं कि भारत सरकार ऐसी व्यवस्था करे कि इस देश में न कोई पतित रह जाये न कोई पतित पावन की जरूरत हो क्योंकि जब तक पतित पावन की जरूरत रहेगी तब तक पतित रहेंगे । इसलिये रेडियो की नीति ऐसी होनी चाहिये कि रेडियो के जरिये कहना चाहिये कि मानव समाज एक है, मानव धर्म एक है, मानवता का बटवारा नहीं किया जा सकता, मानवता अविभाज्य है । क्या सरकार के दिमाग में इस बात की सफायी है कि मानवता का बटवारा नहीं किया जा सकता, मानवता अविभाज्य है ? अगर सरकार के दिमाग में यह बात है तो सरकार रेडियो से इसका प्रसार क्यों नहीं करती ? क्या कभी गुजराल साहब के रेडियो वालों ने हमसे कहा है राजनारायण तुम

हिन्दू मुसलमान और जातपांत के बारे में रेडियो पर चलकर सुनाओ ? ऐसे लोगों के भाषण सुनाना रेडियो पर प्रसारण करना जिनको सुनने से किसी के दिमाग में कोई नया जीवन पैदा करने की बात न हो, इससे क्या फायदा होता है ? इसलिये सर्वप्रथम मैं कहना चाहता हूं : सरकार को सर्वप्रथम अपने दिमाग को साफ करना चाहिये । सरकार को यह कहना चाहिये कि अब मानव मानव समान हैं इसका प्रसारण रेडियो से होगा ; रेडियो से वह सभी प्रसारण बंद किये जायेंगे जो मानव को मानव से दूर रखते हैं जो मानव-मानव में भेद पैदा करते हैं जो मानव-मानव में कटुता और दुराव और अलगाव पैदा करते हैं । क्या सरकार कोई ऐसी गारन्टी देने को तैयार है कि रेडियो से प्रसारण इस नुक्तेनजर से होगा ?

आगे देखा जाये श्रीमन् । तमाम हमने छान डाला है, एक ही श्लोक हमको मिला है, गौतम सूत्र का 22वां श्लोक है जो कहता है : "समान प्रसवात्मिका जातिः" इस श्लोक का प्रसारण उनके रेडियो से एक बार भी हुआ है क्या ? एक बार भी नहीं हुआ है । अंधे के आगे रोये अपना दीदा खोये । ये बिलकुल अंधे हैं । उनकी समझ में यह गूढ़ तत्व आ ही नहीं सकता है । जो किताब में लिख दिया जाय वह किताब के पन्ने में ही रह जायेगी, वह व्यवहार में नहीं आयेगी । जब तक दिमाग साफ होकर उसके मुताबिक कदम नहीं उठायेंगे तब तक यही होगा ।

मैं कहना चाहता हूं कि क्या हमारे परिगणित जाति के भाई आज हिन्दू, मुसलमान, चमार, सिख और ईसाई और सम्पूर्ण मानव समाज को एक एकाई मानने के लिए तैयार हैं । आज हरिजन लोग कहते हैं कि हम मुसलमान हरिजनों और परिगणित जाति के लोगों को नहीं लेंगे । जब वे यह बात कहते हैं तो मैं कहता हूं कि यह तुम्हारा पिछड़ाव बोल रहा है और तुम्हारे दिमाग का जाला अभी तक नहीं कटा है । तुम को कहना चाहिये कि मनुष्य मनुष्य एक है । जब तुम अपने को किसी से बड़ा मानोगे तो दूसरा भी अपने को बड़ा मानेगा । हम चाहते हैं श्रीमन्, आज तक भारतीय समाज में जो जाति व्यवस्था की लकीर खड़ी है उसको पड़ी कर दें । इस बात को श्री चन्द्र शेखर ठीक समझें और श्री ए० पी० सिंह का तो पता नहीं वे बीच में क्या बोलते रहते हैं । आज हमारे देश में जाति की लकीर खड़ी है ।

**श्री उपसभापति** : आप का समय खत्म हो गया है ।

**श्री राजनारायण** : हमारा समय श्रीमन्, खत्म न कीजिये । आज हमारे देश में जो जाति की लकीर है वह एक के ऊपर एक खड़ी है । हम क्या चाहते हैं । शिड्यूल्ड कास्ट के वेलफेयर के लिए और जो परिगणित जाति के उत्थान के लिए लालायित हैं उनसे मैं अर्ज करना चाहूंगा कि भारतवर्ष में जो जाति की लकीर है उसको पड़ी करो । खड़ी नहीं पड़ी ताकि सब बराबर हो जाय । अगर खड़ी रहेगी तो ऊंच-नीच की भावना रहेगी । इसलिए जो जाति की लकीर आज तक हमारे देश में खड़ी है उसको पड़ी किया जाय । क्या गुजरात का रेडियो हमारे इस भाषण का सार तत्व निकालकर अपने रेडियो द्वारा ब्राडकास्ट करायेगा ? नहीं करायेगा क्योंकि यह तो जीवन के अंग और दिल व दिमाग को झकझोरने वाला है । जब तक इन्सान के दिमाग में इस तरह की बातें नहीं भरी जायेंगी, जब तक उसका दिमाग झकझोरा नहीं जायेगा तब तक काम बनने वाला नहीं है । इसलिए मैं चेतावनी देना चाहता हूं कि आपने बर्रे की छत में आग लगा दी है और आप ने उस बर्रे की छत में आग लगा कर जो बर्रे उसमें हैं वे फरफरा रहे हैं ।

श्रीमन्, आप हमें बिना लेकर चले गये सारनाथ और वहां से लौट आये । अब एक प्रोग्राम बनाया जा रहा है सनातन धर्मियों द्वारा । अयोध्या से एक ब्राह्मण का समूह लगातार कपड़ा बिछाते हुए बनारस तक जाये । मैं पूछना चाहता हूं कि किस के दिमाग द्वारा इस तरह की खुराफात की बातें पैदा होती हैं । क्या सरकारी पक्ष के लोग इसमें नहीं हैं ! मैं इधर इसकी चर्चा नहीं करना चाहता था मगर मैं बगैर चर्चा किये न अपने साथ और न ही अपने सम्मानित सदस्यों के साथ न्याय कर पाऊंगा । हमारे सर्वप्रथम राष्ट्रपति स्वर्गीय डा० राजेन्द्र प्रसाद, जिनकी मैं बहुत इज्जत करता हूं, जिनके मैं बहुत नजदीक रहा हूं, उन्होंने बनारस में काशी के राजा की कोठी में 101 ब्राह्मण द्वारा चरणामृत लिया । यह किस के दिमाग का द्योतक है और क्या इस बात की तरफ सरकारी पक्ष का ध्यान

[श्री राजनारायण]

जा रहा है कि भारत के राष्ट्रपति, प्रथम राष्ट्रपति, जो स्वतंत्रता संग्राम के एक सेनानी रह चुके हैं, वे ब्राह्मणों का चरणामृत लेते हैं । आपको जानकर इस बात का दुःख होना चाहिये कि उसमें हमारे एक दल का चला गया था श्री जगन्नाथ उपाध्याय जो बनारस संस्कृत विद्यालय में बौद्ध दर्शन का हैड है । जब जगन्नाथ उपाध्याय को यह मालूम हुआ कि यहां पर ब्राह्मणों का चरणामृत लिया जायेगा तो वह भाग खड़ा हुआ । इस तरह से वहां पर 101 ब्राह्मणों की जगह पर 100 ही ब्राह्मण रह गये । एक ब्राह्मण की कमी को पूरा करने के लिये पुलिस वाले एक राह चलते हुए आदमी को पकड़ लाये और उसे 101 नम्बर वाला ब्राह्मण बना दिया और तब जाकर डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने चरणामृत छुआ और सब ब्राह्मणों को ग्यारह ग्यारह रुपया दक्षिणा के रूप में दिया । तो मैं यह जानना चाहता हूं कि यह किस के दिमाग का द्योतक है । क्या श्री अप्पन साहब के दिमाग का द्योतक है और क्या ऐसे दिमाग से परिगणित जाति के लोगों का उत्थान होगा ? हरगिज नहीं । अगर परिगणित जाति के लोगों का उत्थान करना है तो इस दिमाग को खरोंचो और गहरा पंजा मारकर उसको साफ करो वरना दिमाग साफ नहीं होगा ।

मैं आज पूछना चाहता हूं कि आज ईमानदारी की बात होनी चाहिये । अगर हमारी कोई लड़की हो और वह लड़की हरिजन से शादी करने के लिए तैयार हो जाय तो हम कोशिश करेंगे कि वह शादी हो जाय और हम बराबर इस बात की कोशिश करते रहते हैं । इस बारे में हमारे दिमाग में एक मात्र के लिए भी हिचक नहीं होगी कि हमारी लड़की चमार के लड़के के साथ शादी करने जा रही है । मगर मैं जानना चाहता हूं कि आज जो सरकारी पक्ष के मंत्रीगण हैं, जिनके पास वह प्रभुताई है, अगर उनका दामाद कोई हरिजन आ जाय तो उस हरिजन की जिन्दगी क्या वे ठीक से चला पायेंगे ? किस मंत्री ने हरिजन से शादी की अपने घर में, हरिजन लड़के को अपनी लड़की किसने दी ? 1947, 15 अगस्त से आज 1970 आ गया, राष्ट्रपिता की जन्म-शताब्दी भी मना दी गई, फिर भी आज कांग्रेस मंत्रिमंडल का एक मंत्री नहीं निकला ब्राह्मण या क्षत्रिय या वैश्य जो अपनी लड़की को हरिजनों को देने के लिए तैयार हो । हां, कोई इस तरह निकल जाय तो निकल जाय लेकिन स्वेच्छा से, प्रसन्नता के साथ, समारोह करके कोई मंत्री तैयार नहीं हुआ है । कोई हुआ है, जगन्नाथ राव जी ? नहीं हुआ है तो केवल कागज पर परिगणित जाति का उत्थान करेंगे ? यह तमाम कमीशन बना कर रुपया खर्च करने का फायदा क्या ? चूं-चूं का मुरब्बा, कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़कर एक रिपोर्ट बना कर रख दी ।

आज हमारे आदरणीय राम मनोहर लोहिया यहां नहीं हैं, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि उनकी हिम्मत थी, उनका साहस था कि वाराणसी में 1958 में उन्होंने सोशलिस्ट पार्टी के अधिवेशन में कहा कि पिछड़ी जातियों को जीवन के हर क्षेत्र में 60 फीसदी जगह कम से कम मिलनी चाहिए । तमाम हरिजन, तमाम आदिवासी, तमाम गरीब-दबे मुसलमान, औरतें, शूद्र यह 95 फीसदी होते हैं, मगर आज सभी सेवाओं को देख लिया जाय तो उन्हें 5–10 फीसदी जगह भी नहीं है । भारतवर्ष की तमाम जनता के 95 फीसदी भाग को सरकारी सेवाओं में 10 फीसदी से भी कम स्थान प्राप्त हैं । देश कैसे आगे बढ़ेगा ? एक पार्टी आपके देश में है, श्रीमन्, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी जो लगातार हैमरिंग कर रही है, लगातार इस बात को कह रही है, मगर इस सरकार के बूते की यह बात नहीं है कि सरकार इस को कह सके । हमारे मित्र अप्पन साहब जानते होंगे, हम खुद भुक्तभोगी हैं . . .

**श्री उपसभापति** : आप अप्पन साहब के बारे में बोलना चाहते हैं तो ऐसी भाषा में बोलिए कि वे समझ सकें ।

**श्री राजनारायण** : हमारी बात समझ रहे हैं ?

**श्री उपसभापति** : आपके 7 मिनट हैं क्योंकि 6 बजे हमको हाउस एडजर्न करना होगा । आप 40 मिनट बोल चुके हैं, और कितना बोलना चाहते हैं ?

**श्री राजनारायण** : मुझे आराम से सुनिए, मैं इधर उधर की बात नहीं कर रहा हूं । हमारी एक आई०सी०एस० से बातचीत हुई, मैं नाम नहीं बतलाऊंगा, उन्होंने कहा राजनारायण जी चाहे आप कितना ही कानून बनाइए, हम ब्राह्मणों, राजपूतों और वैश्यों

को सर्विसेज में चलवायेंगे। हमने कहा कैसे, तो उन्हों ने कहा कि सारी सर्विसेज के लिए आदमियों का हम साक्षात करते हैं, अगर—परिगणित जाति का लड़का तेज भी होता है तो हम साक्षात के नम्बर बढ़ा देते हैं। क्या इस सरकार ने कोई ऐसा कानून बनाया जिसके जरिए यह सम्भव हो कि जो हरिजनों के साथ अन्तर्जातीय शादी करेगा नौकरी में उसको पहले जगह मिलेगी और जगह मिलने के बाद उसको 100 रुपया, 50 रुपया स्पेशल भत्ता मिलेगा ? अगर सरकार इस तरह का कानून नहीं बनाती, केवल यह सरकार कहती है कि हम परिगणित जातियों का उत्थान करेंगे मौखिक तो वह कभी होने वाला नहीं है। जैसे हिन्दू समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और जो ये द्विज हैं आज अद्विज कहे जाने वाले लोगों पर अपना शोषण जमाए हुए हैं, खूनी पंजे जमाए हुए हैं, उसी तरह से, श्रीमन्, आज मुसलमानों में शेख, सैयद हैं, जो बड़े बड़े नवाब और ताल्लुकेदार हैं वे अन्सारी लोगों पर, जो जुलाहे लोग हैं, भिश्ती लोग हैं, हेला लोग हैं, इन लोगों के ऊपर अपना रोब जमाए हुए हैं, इनके यहां भी छुआछूत बढ़ता जा रहा है, इनके यहां भी होता है "तुम अलग रहो"। अकबर अली खान साहब से मैं पूछना चाहता हूं कि गांधी जी जिस तरह हरिजनों की बस्ती में निवास किया करते थे, क्या अकबर अली खान साहब जुलाहों की बस्ती में जाकर अपनी जिन्दगी वहां बितायेंगे या हैदराबाद में जाकर अपनी आलीशान नवाब साहब की कोठी में रहेंगे . . . .

**श्री उपसभापति** : आप अकबर अली खान साहब को क्यों कह रहे हो ?

**श्री राजनारायण** : वे नवाब हैं, मैं जानता हूं, और, जैसा चन्द्रशेखर कहते हैं, पुराने जो श्लेषावशेष हैं उनके प्रतीक हैं। तो मैं उन को बताना चाहता हूं कि आखिर यह चीज चलेगी कैसे, बढ़ेगी कैसे ? 95 फीसदी और 5 फीसदी और 5 फीसदी और 95 फीसदी। इसलिये हम ने कहा कि 60 फीसदी का सिद्धान्त सीधा सिद्धान्त है। 95 को 60 दो और 5 को 40 दो। यह भी मजे की बात है कि गरीब ब्राह्मण और ठाकुरों के लड़के भी बहुत जगह जगह नहीं पाते, मगर जब चुनाव का मौका आता है तो जातिवाद की जो लहर बहती है वह सारे सिद्धान्तों को दबा कर बैठा देती है, चकनाचूर कर देती है। एक मिसाल है कि खरबूजे को देख कर खरबूजा रंग बदलता है। हमारा दल अछूता था इस रोग से, मगर मैं देख रहा हूं कि उस में भी कहीं कहीं यह रोग घुस रहा है। कांग्रेस पार्टी और श्रीमती इन्दिरा नेहरू गांधी और श्रीमती फीरोज गांधी के इधर जो कार्य-कलाप रहे हैं उन्होंने इस को बड़ा बढ़ावा दिया है क्यों कि देश में जातीवाद और हिन्दू-मुसलमान और पैसावाद इन तीनों को चला कर वह अपने प्रधान मन्त्रित्व को कायम रखना चाहती हैं और इस के लिए लालायित हैं और उधर ही चल रही है। इसलिए मैं चाहता हूं कि आप और सदन इस सरकार को हिदायत दें कि सरकार ऐसी व्यवस्था करे जिस से कि परिगणित जाति के बच्चों की पढ़ाई, उन की खुराक, उन के मकान, इन सब की व्यवस्था सर्वप्रथम हो। मां के पेट से न कोई गरीब पैदा होता है और न कोई अमीर। गरीब वह है जिस के पास दौलत पैदा करने का जरिया नहीं है, और दौलत पैदा करने के जरिये क्या हैं ? दौलत पैदा करने का जरिया है खेत, दौलत पैदा करने का जरिया है कल-कारखाने, दौलत पैदा करने का जरिया है खदानें, दौलत पैदा करने का जरिया है कारबार, धंधा और नौकरी पेशा। परिगणित जाति के लिए इस सरकार ने कितने खेत का इंतजाम किया है, उन के लिए इस सरकार ने लघु उद्योगों का कितना प्रबन्ध किया है ? परिगणित जातियों के लिए इस सरकार ने खदानों में कितनी जगहें दी हैं, उन को कल-कारखानों में कितनी जगह दी ? और क्या केवल मौखिक बात से ही यह सब हो जायगा ? महर्षि पतंजलि ने कहा है : "जिस में समता का व्यवहार हो वह समाज है।" इससे बड़ा वाक्य हमारी इन्दिरा नेहरू गांधी या गुजराल साहब नहीं कह सकते, लेकिन वह वाक्य पोथी में धरा रह गया। जो पतंजलि का समता का सिद्धान्त अपना कर समाज को उठाना चाहते थे वे विषमता के गर्त में ही आज समाज को गिरा रहे हैं। कृष्ण को योगी माना जाता है। कृष्ण ने गीता में उपदेश किया है :

"विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥"

विद्या-विनय से सम्पन्न ब्राह्मण हो, गाय हो, हाथी हो, कुत्ता हो, चाण्डाल हो, सब को वे बराबर मानते हैं। कृष्ण का यह वाक्य भारतीय समाज में कभी चरितार्थ हुआ क्या ? क्या इस ने भारतीय समाज में

[श्री राजनारायण]

कभी मूर्तिमान स्वरूप ग्रहण किया है ? नहीं किया । जो कृष्ण इंसान में, पशु में, पक्षी में, कुत्ते में, बराबरी का पाठ पढ़ाता है आज उस कृष्ण का देश भ्रष्टाचार के गर्त में डूबा जा रहा है, विषमता के गर्त में डूबा जा रहा है, इस में गैर-बराबरी की खाई बढ़ती जा रही है ।

**श्री उपसभापति** : राजनारायण जी आप का एक मिनट बाकी है ।

**श्री राजनारायण** : राम की बड़ी महिमा गायी जाती है । राम की खूबी क्या थी ? राम के राज्य में विषमता नहीं थी । राम ने गद्दी पर बैठ कर पहले ही दिन क्या कहा ? राम गरीबों के निवाज कहे गये क्योंकि राम ने विलासिता की वस्तुओं को मना कर दिया । चारा, पानी और अनाज जो इंसान की जिन्दगी के लिए आवश्यक वस्तुएं थीं उन सामग्रियों को सस्ते से सस्ता किया । आज यह कांग्रेस की सरकार, श्रीमती इन्दिरा नेहरू गांधी जो अपना शासन चला रही है उस में इंसान की जरूरत की चीजों की कीमत ही बढ़ती जा रही है ।

इसलिये मैं चाहता हूं कि एक कायदा कानून बने कि यहां पर जो हरिजनों के बच्चे, परिगणित जाति के बच्चे हैं उनको कोई भी दिक्कत न हो उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के लिए और उनको बड़ी नौकरियों में जगह मिले, उनको खेतों पर जगह मिले, उनको कल-कारखानों में जगह मिले, तब जा कर दूसरों को मिले ।

श्रीमन्, इसके बाद फिर हमारा दूसरा नम्बर आयेगा पिछड़ी जातियों के बारे में ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN : , 1 am adjourning Ihe House now. The House stands adjourned till 11 A.M. on Monday.

The House then adjourned at six of ihe clock till eleven of the clock on Monday, Ihe 7th September, 1970.

MGIPRRND 1st Sec—15 RS—16-11—70—400.